क़ुर्आन और हदीस से
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की
सच्चाई की दलीलें
और ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन

Testimonies of Quran & Hadees
in support of the truth
of
promised Messiah and the narration of faith
inspiring incidents

भाषण
हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

क़ुर्आन और हदीस से
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की
सच्चाई की दलीलें
और ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन

भाषण

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

नाम पुस्तक	: क़ुर्आन और हदीस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलीलें और ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन
Name of book	: Quran aur Hadees se Hazrat Masih Maud As ki Sachchai ki Daleelen aur Iman Wardhak Ghatnaaun ka Warnan
भाषण	: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
Lecture	: Hazrat khalifatul Masih khamis ABA.
अनुवादक	: आली हसन एम् ए
Translator	: Ali Hasan M. A.
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2025 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) 2025
संख्या, Quantity	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

प्रकाशक की ओर से

इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह पंचम के विशेष आदेश पर यह पुस्तिका "क़ुर्आन और हदीस से हज़रत मसीह मौऊद अलै० की सच्चाई की दलीलें और ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन" नज़ारत नश्र व इशाअत क़ादियान से प्रकाशित की जा रही है।

यह पुस्तिका जलसा सालाना क़ादियान सन् 2023 ई. के अवसर पर हुज़ूर अनवर के भाषण पर आधारित है जिसका लन्दन से लाइव प्रसारण हुआ था। इस भाषण में हुज़ूर अनवर ने क़ुरआन की आयतों और रूहानी ख़ज़ाइन के हवालों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने के बारे में पेशगोइयों का ज़िक्र करते हुए इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई प्रकट करने के लिए जहाँ इन पेशगोइयों का प्रकटन हो रहा है वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने के निशान भी प्रकट हो रहे हैं। इन निशानों को देखकर अहमदियों की आस्था और ईमान मज़बूत हो रहे हैं वहाँ दूसरों पर भी अहमदियत की सच्चाई प्रकट हो रही है।

इस बारे में हुज़ूर अनवर ने कुछ लोगों की अहमदियत क़ुबूल करने की ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन किया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों (हवालों) को प्रस्तुत करते हुए

अहमदियत के ग़लबा का वर्णन किया है। विश्व के वर्तमान हालात की दृष्टि से यह किताब प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त लाभदायक है। इसका हिन्दी अनुवाद श्री अलीहसन ने किया है। इसके बाद श्री शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), श्री फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), श्री इब्नुल मेहदी एम् ए और श्री मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

अत: इस पुस्तिका की तैयारी में सहयोग करने वाले समस्त लोगों को अल्लाह उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और इसके प्रकाशन एवं प्रसारण को शुभ एवं कल्याणकारी बनाए और इसके उत्तम परिणाम प्रकट करे।

वस्सलाम

ख़ाकसार

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत, क़ादियान

अल्लाह तआला ने चाहा है कि वह इस सिलसिला को बढ़ाए। अतः कौन है जो इसे रोक ले।
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम वह मसीह मौऊद व महदी मअहूद हैं जो अल्लाह तआला के वादों के मुताबिक़ इस्लाम के पुनरुत्थान और उसके प्रचार-प्रसार को चर्मोत्कर्ष तक पहुँचाने के लिए आए हैं।

आज यहाँ दुनिया भर से आए हुए लोग जो क़ादियान में बैठे हुए हैं और दुनिया भर में जो अहमदी इस जलसा को देख और सुन रहे हैं। क्या यह सब अल्लाह तआला की सहायताओं के प्रमाण नहीं? क्या झूठे दावे करने वाले को यह प्रसिद्धि मिलती है कि सारी दुनिया में उसके नाम का नारा लगाया जाता है और 130 साल से भी अधिक वर्षों से हर दिन चढ़ने वाला सूरज जमाअत अहमदिया की तरक़्क़ी की ख़ुशख़बरी देते हुए निकलता है। हे अहमदियत की मुख़ालिफ़त (विरोध) करने वालो! कुछ तो अक़्ल से काम लो।

हमारे मुख़ालिफ़ीन समझते हैं कि उनकी मुख़ालिफ़त अहमदियत के फैलने की राह में रुकावट बन सकती है, और यह दावा करते हैं कि हम अहमदियत को नऊज़ुबिल्लाह दुनिया से मिटा देंगे और इसका

दुनिया के आख़िरी किनारे तक मुक़ाबला करेंगे। लेकिन अल्लाह तआला उनकी मुख़ालिफ़त में भी अहमदियत की सच्चाई के नज़ारे दिखाता है।

इन्शाअल्लाह कल से नया साल शुरू हो रहा है। आज रात तहज्जुद में नए साल के बाबरकत होने और दुनिया से अन्याय एवं अत्याचार के अन्त होने के लिए भी दुआ करें। यह भी दुआ करें कि दुनिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के उद्देश्य को समझे और आपको स्वीकार करे। अल्लाह तआला हम सब को अपनी सुरक्षा में रखे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव से संबंधित ख़ुदा की सहायताओं का वर्णन

फ़िलिस्तीन के पीड़ितों, पाकिस्तानी अहमदियों, असीराने राह-ए-मौला (धर्म का पालन करने की वजह से जेल में बंद) और नए साल के शुभ एवं कल्याणकारी होने और दुनिया से अन्याय एवं अत्याचार का अन्त होने के लिए दुआओं का आह्वान

128वें जलसा सालाना क़ादियान 2023 ई. के समापन समारोह के सुअवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का प्रभावी एवं ज्ञानवर्धक हृदयंगम भाषण

(स्थान- ऐवान-ए-मसरूर इस्लामाबाद टिलफ़ोर्ड यू. के. 31 दिसम्बर सन् 2023 ई.)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۱﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۳﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۴﴾ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿۵﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

कलिमा तौहीद और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद क़ुर्आन करीम की सूर: मुज़म्मिल की निम्नलिखित आयत पढ़ी -

اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿۱۶﴾ (अल् मुज़्ज़म्मिल्-16)

इस आयत का तर्जुमा यह है कि हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है जो तुम पर उसी तरह संरक्षक है जिस तरह हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।

फिर आप ने फरमाया: **आज क़ादियान में जमाअत अहमदिया भारत का जलसा सालाना अपने समापन को पहुँच रहा है** और साथ ही कई अन्य देश भी हैं जहाँ इन दिनों जलसा सालाना का

आयोजन हुआ है। कहीं पिछले सप्ताह हुआ है, कहीं हो रहा है और कहीं अगले सप्ताह होगा। आज भी इस समय यह समापन समारोह सैनीगाल, टोगो, गिनी कनाकरी, गिनीबसाओ इत्यादि विभिन्न देशों में हो रहा है, और इन सबका सीधा प्रसारण हो रहा है, हम उन्हें देख रहे हैं वे हमें देख रहे हैं।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो अल्लाह तआला ने वादा किया था कि:-

''मैं तुझे ज़मीन के किनारों तक प्रतिष्ठा के साथ प्रसिद्धि दूँगा और तेरे मान-सम्मान को बढ़ाऊँगा और तेरा प्रेम दिलों में डाल दूँगा। جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ (हमने तुझे मसीह इब्नि मरियम बना दिया है) उनको कह दे कि मैं ईसा अलैहिस्सलाम के रूप में आया हूँ।'' (इज़ाल: औहाम भाग-2, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-3 पृ. 442)

ख़ुदाई वादे के पात्र

अत: अब सारी दुनिया के देशों में जलसों का आयोजन, आपका नाम आदर और सम्मान से पुकारा जाना, आपके नाम का नारा, यह सब उस ख़ुदाई वादा के अनुसार हैं कि आप ही इस युग के वह मसीह व महदी हैं जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में अवतरित हुए।

आज यह क़ादियान की बस्ती जो सौ सवा सौ वर्ष पहले एक साधारण सा गाँव या बस्ती थी एक सुन्दर शहर के रूप में विकसित हो गई है, बल्कि दुनिया के कोने-कोने में यह प्रसिद्ध है और यह प्रसिद्धि हज़रत मसीह व महदी के यहाँ अवतरित होने के कारण है,

अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए वादों के कारण है। आज इस बस्ती में संसार के दर्जनों देशों के वासी जलसा सालाना में सम्मिलित होने के लिए इकट्ठे हुए हैं। इस समय लगभग 42 देशों के प्रतिनिधि वहाँ मौजूद हैं। रूसी देशों के लोग भी हैं, अरब देशों के लोग भी हैं, अफ्रीकी देशों के लोग भी हैं, इण्डोनेशिया और द्वीप समूहों के लोग भी हैं, यूरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलिया इत्यादि महाद्वीपों के लोग भी हैं। अत: यह एक सुन्दर निशान है अल्लाह तआला के वादों के पूरा होने का। एक आदमी जो एक छोटी सी जगह में रहता है, जहाँ पहुँचने के रास्ते भी कठिन हैं और किसी प्रकार के साधन भी नहीं, वह दावा करता है कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा किया है कि मैं तुझे प्रतिष्ठा के साथ प्रसिद्धि दूँगा और फिर वह वादा बड़ी शान से पूरा भी हो रहा है कि अल्लाह तआला ने चौदहवीं सदी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक सच्चे सेवक के आने की ख़ुशख़बरी दी थी ताकि धर्म (इस्लाम) की तरोताज़गी का एक नया दौर शुरू हो। अब उसको ख़ुदा तआला पूरा कर रहा है। इसलिए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम वह मसीह मौऊद व महदी मअहूद है जो अल्लाह तआला के वादों के अनुसार दीन-ए-इस्लाम के पुनरुत्थान और सारी दुनिया में उसके पूर्णरूपेण प्रचार व प्रसार के लिए अवतरित हुए हैं।

अत: मुसलमानों को तो इस बात पर ख़ुश होना चाहिए कि इस्लाम के पुनरुत्थान का ज़माना आया है और कमज़ोरियाँ दूर करने का समय आया है और इस्लाम को सारी दुनिया में फैलने-फैलाने का ज़माना आया है। लेकिन झूठे उलमाओं के स्वार्थ भोलेभाले और वास्तविक इस्लाम से अनजान मुसलमानों को सही रास्ते से भटकाने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन एक समय आएगा जब उन्हें मानना पड़ेगा (कि अहमदियत सच्ची है)। यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला का वादा है कि अन्ततः यह लोग स्वीकार करेंगे।

अल्लाह तआला के समर्थन (तायीदात)

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव और अल्लाह तआला के समर्थनों से सम्बन्धित कुछ बातें करूँगा।

यह आयत जो अभी मैंने पढ़कर सुनाई है इसकी गूढ़ और रहस्यपूर्ण व्याख्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी विभिन्न रचनाओं में वर्णन की है। यहाँ उनके कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

''स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न पैदा होता है कि मसीह मौऊद को इस उम्मत में से पैदा करने की ज़रूरत ही क्या थी? इसका उत्तर यह है कि अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में यह वादा किया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी नबूव्वत काल के आरम्भिक और अन्तिम युग की दुष्टि से हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के तुल्य होंगे। अतः वह एक तुल्यता तो अव्वल (आरम्भिक) ज़माने में थी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़माना था और एक आख़िरी (अन्तिम) ज़माना में होगी।.....अतः अव्वल (आरम्भिक) तुल्यता यह साबित हुई कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा ने फ़िरऔन और उसके लश्कर (गिरोह) पर सफलता दी थी उसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

को अबूजहल और उसके लश्कर (गिरोह) पर, जो उस ज़माने का फ़िरऔन था। फिर उन सब को समाप्त करके इस्लाम को अरब देश में स्थायित्व प्रदान किया और उस ख़ुदाई सहायता से यह पेशगोई पूरी हुई कि:-

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۢ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ﴿۱۶﴾ (अल् मुज़्ज़म्मिल्-16)

और आख़िरी (अन्तिम) ज़माने में यह तुल्यता है कि ख़ुदा तआला ने मूसवी उम्मत के आख़िरी ज़माने एक ऐसा नबी अवतरित किया जो जिहाद (अर्थात् धार्मिक लड़ाइयों) का मुख़ालिफ़ था और धार्मिक लड़ाइयों से उसे कुछ सरोकार न था, बल्कि क्षमा और दरगुज़र करना उसकी शिक्षा थी, और वह ऐसे समय में अवतरित हुआ था कि जब बनी इस्राईल (अर्थात् यहूदियों) के आचरण बहुत बिगड़ चुके थे और उनके चाल-चलन में बहुत ख़राबियाँ पैदा हो गई थीं और उनका शासन समाप्त हो चुका था और वे रोमी शासन के अधीन हो चुके थे, और वह हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद ठीक चौदहवीं सदी पर अवतरित हुआ था और उस पर इस्राईली नबूवत् का सिलसिला समाप्त हो गया था और वह इस्राईली नबूवत् की आख़िरी ईंट था।

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आख़िरी ज़माना में मसीह इब्नि मरियम के स्वभाव पर इस विनीत लेखक को अवतरित किया और मेरे ज़माने में जिहाद की परम्परा को उठा दिया, जैसा कि पहले से भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह मौऊद के ज़माने में जिहाद को स्थगित कर दिया जाएगा। इसी तरह मुझे क्षमा और माफ करने की शिक्षा दी गई है और मैं ऐसे समय में

आया हूँ जब कि अधिकतर मुसलमानों की अन्दरूनी हालत यहूदियों की तरह ख़राब हो चुकी थी और उनमें रूहानियत ख़त्म होकर सिर्फ़ रस्मोरिवाज शेष रह गया था और क़ुर्आन शरीफ़ में इन विषयों की ओर पहले से संकेत किया गया था।

(लैक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-20 पृ. 212-213)

फिर एक जगह आप फ़रमाते हैं:-

''मसीह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी केवल हदीसों में नहीं है, बल्कि क़ुर्आन शरीफ़ ने अत्यन्त रहस्यपूर्ण संकेतों में आने वाले मसीह की ख़ुशख़बरी दी है। जैसा कि उसने वादा किया है कि जिस तरह और तरीके से इस्राईली नबूवतों में सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त क़ायम किया गया है उसी तरह इस्लाम में होगा। यह वादा अपने अन्दर मसीह मौऊद के आने की ख़ुशख़बरी रखता है। क्योंकि जब बनी इस्राईल के नबियों में क़ायम होने वाले सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि वह सिलसिला हज़रत मूसा से शुरू हुआ और फिर चौदह सौ वर्ष बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ख़त्म हो गया और इस निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त पर ग़ौर करने से ज्ञात होता है कि यहूदियों का मसीह मौऊद जिसके आने की यहूदी क़ौम को ख़ुशख़बरी दी गई थी, वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चौदह सौ वर्ष बाद आया था और ग़रीबों और असहायों के रूप में अवतरित हुआ और इस समानता को पूर्ण करने के लिए जो क़ुर्आन शरीफ़ में दोनों सिलसिलों अर्थात् ख़िलाफ़त-ए-इस्राईली और ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदी में रखी गई है, आवश्यक है कि हर एक न्यायप्रिय इस बात को स्वीकार करे कि सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया के आख़िर में भी एक मसीह मौऊद के आने का वादा हो, जैसा कि सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-मूसविया के आख़िर में एक

मसीह मौऊद का वादा था, और दोनों सिलसिलों की व्यापक समानता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस तरह ख़िलाफ़त-ए-मूसविया में मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौदहवीं सदी में बनी इस्राईल के लिए मसीह मौऊद अवतरित हुआ था उसी तरह ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उसी अवधि के अन्दर ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया का मसीह मौऊद अवतरित हो। इसके अतिरिक्त व्यापक समानता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस तरह यहूदियों के उलमा ने ख़िलाफ़त-ए-मूसविया में आने वाले मसीह मौऊद को नऊज़ुबिल्लाह काफ़िर और मुल्हिद (अधर्मी और नास्तिक) और दज्जाल ठहरा दिया था, उसी तरह ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया के मसीह मौऊद को मुसलमानों के रूढ़िवादी उलमा (अर्थात् मौलवी-मुफ़्ती) काफ़िर और मुल्हिद और दज्जाल ठहरावें। और व्यापक समानता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस तरह ख़िलाफ़त-ए-मूसविया का मसीह मौऊद ऐसे समय में आया था कि जब यहूदियों के आचरण बहुत ख़राब हो गए थे और दियानत और अमानत और तक़्वा (संयम) और पाकीज़गी और पारस्परिक प्रेम और मैत्रीयता में बहुत बिगाड़ आ चुका था और उनका उस देश का शासन भी समाप्त हो गया था जिस देश में मसीह मौऊद उनके सन्मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुआ था। उसी तरह ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया का मसीह मौऊद क़ौम की ऐसी हालत और ऐसी दुर्दशा के समय अवतरित हो। (जो यहूदियों की हो चुकी थी अनुवादक)।

(अय्यामुस्सुलह, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-14 पृ. 283-284)

अत: यही हालात थे जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने दावा किया और फ़रमाया कि मैं ही वह मसीह मौऊद हूँ जिसने आना था।

क्या मसीह मौऊद के ज़माने के बारे में क़ुर्आनी पेशगोइयाँ हैं?

इस बारे में हम देखते हैं यह पेशगोइयाँ किस शान से पूरी हुईं और अब भी पूरी हो रही हैं। इसकी व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

फिर इसी ज़माने की निशानियों में से यह भी है कि उस समय भौतिक ज्ञान एवं कलाओं की खोज होगी। कुछ आविष्कारों और कलाओं को उदाहरणत: बयान फ़रमाया है जो निम्नलिखित हैं:-

وَ اِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ وَ اَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ (الانشقاق:4تا5)

जब ज़मीन खींची जाएगी अर्थात् ज़मीन साफ़ की जाएगी और आबादी बढ़ जाएगी और जो कुछ ज़मीन में है उसको ज़मीन बाहर डाल देगी और ख़ाली हो जाएगी अर्थात् समस्त भौतिक योग्यताएँ प्रकट हो जाएँगी और यह पेशगोई भी हम पूरी होती देख रहे हैं इसके अलावा आबादियाँ बढ़ रही हैं खनिज पदार्थों को भी निकाला जा रहा है और कई देशों में तो कई खानें कुछ इलाक़ों में समाप्त हो गई हैं।

फिर फ़रमाया कि:-

وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (अल् तकवीर : 5)

अर्थात् उस ज़माने में ऊँटनी बेकार हो जाएगी और उसकी कोई क़द्र न होगी।

फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ (अल् तकवीर : 11)

और जब किताबें छापी जाएँगी और फैलाई जाएँगी अर्थात् किताबों के प्रचार-प्रसार के साधन पैदा हो जाएँगे। यह प्रिंटिंगप्रैसों और डाकख़ानों की ओर संकेत है कि आख़िरी ज़माने में उनकी अधिकता हो जाएगी, और अब तो प्रचार-प्रसार के और भी नए-नए साधन

निकल आए हैं। आज यह हमारा जलसा जो पूरे विश्व में प्रसारित हो रहा है यह भी उसी का परिणाम है।

फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ (अल् तकवीर : 8)

और जिस समय वजूद (अस्तित्व) परस्पर मिलाए जाएँगे। यह सुदूर देशों की क़ौमों के परस्पर मेल-मिलाप की ओर संकेत है। तात्पर्य यह कि आख़िरी ज़माने में रास्तों के खुलने और डाक-टेलीग्राम इत्यादि की व्यवस्था हो जाने के कारण लोगों के सम्बन्ध बढ़ जाएँगे और एक देश दूसरे देश से मिलेगा और दूर-दूर के रिश्ते और व्यापारिक सहमतियाँ होंगी और दूर-दूर के देशों से मित्रता बढ़ जाएगी। टेलीविजन, इन्टरनेट, वायुमार्ग इत्यादि इसका प्रमाण हैं। आज लोग अनेक देशों से आकर यहाँ क़ादियान में एकत्र हुए हैं, यह इसी का प्रमाण है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) के द्वारा संसार के हर देश में जो इस्लाम का पैग़ाम पहुँचा है यह उसी बात का मुँह बोलता प्रमाण है।

फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ (अल् तकवीर : 6)

और जिस समय वहशी आदमियों के साथ इकट्ठे किए जाएँगे। तात्पर्य यह कि वहशी क़ौमों में सभ्यता और शिष्टता पैदा होगी, अत्यन्त नीच और कमीने सांसारिक पद-प्रतिष्ठा पाएँगे, भौतिक ज्ञान एवं कलाओं के फैलने के कारण कुलीनों और कमीनों में कुछ अन्तर नहीं रहेगा, बल्कि कमीने प्रभुत्व पा जाएँगे, यहाँ तक कि सरकारी ख़ज़ाना और सत्ता की बागडोर उनके हाथ में होगी और इस आयत का विषय एक हदीस के सार से भी मिलता है।

फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا الۡبِحَارُ فُجِّرَتۡ (अल् इन्फ़तार : 4)

और जिस समय दरिया फाड़े जाएँगे अर्थात् ज़मीन पर नहरें फैल जाएँगी और खेतीबाड़ी अधिकता से होगी।

फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا الۡجِبَالُ نُسِفَتۡ (अल् मुरसलात : 11)

और जिस समय पहाड़ उड़ाए जाएँगे और उनमें पैदल और सवारों के चलने की सड़कें या रेल के रास्ते बनाए जाएँगे।

फिर इसके अतिरिक्त घोर अन्धकार फैलने की निशानियाँ बयान फ़रमायीं।

और फ़रमाया:-

اِذَا الشَّمۡسُ كُوِّرَتۡ (अल् तकवीर : 2)

जिस समय सूरज लपेटा जाएगा अर्थात् घोर अन्धकार, मूर्खता और पाप दुनिया पर छा जाएगा मानो व्यापक अँधेरा छा जाएगा। आजकल यही है गुनाहों (पापों) में सारे लिप्त हैं। फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا النُّجُوۡمُ انۡكَدَرَتۡ (अल् तकवीर : 3)

और जिस समय तारे धुंधले हो जाएँगे अर्थात् उलमा का नूर-ए-इख़्लास जाता रहेगा (अर्थात् छल और कपट से भर जाएँगे)।

फिर फ़रमाया:-

وَاِذَا الۡكَوَاكِبُ انۡتَثَرَتۡ (अल् इन्फ़तार : 3)

और जिस समय तारे झड़ जाएँगे अर्थात् रब्बानी उलमा (अध्यात्मज्ञ) गुज़र जाएँगे, क्योंकि यह तो सम्भव ही नहीं कि ज़मीन पर तारे गिरें और फिर ज़मीन पर लोग ज़िन्दा रह सकें। इससे तात्पर्य यह नहीं कि असली सितारे ज़मीन पर गिरेंगे बल्कि यह तात्पर्य है कि जो रब्बानी उलमा हैं वे नहीं रहेंगे।

फिर फ़रमाया कि:-

याद रहे कि मसीह मौऊद के आने के लिए इसी तरह की पेशगोई इन्जील में भी है कि वह उस समय आएगा कि जब ज़मीन पर तारे गिर जाएँगे और सूरज और चाँद का नूर जाता रहेगा। और इन पेशगोइयों को ज़ाहिर पर चस्पाँ (चरितार्थ) करना कल्पना से इतना दूर है कि कोई बुद्धिमान कदापि यह नहीं सोच सकता कि सचमुच सूरज की रौशनी समाप्त हो जाए और सारे सितारे ज़मीन पर गिर पड़ें और फिर हमेशा की तरह लोग ज़मीन में ज़िन्दा रहें और इस हालत में मसीह मौऊद आए।

अगर ज़ाहिरी अर्थों में लें तो यह सम्भव ही नहीं है। यदि तारे गिरें और सूरज की रौशनी ख़त्म हो जाए तो यह तो तबाही, बर्बादी और क़यामत का नज़ारा होगा, उस समय मसीह मौऊद आकर क्या करेगा? और किस लिए आएगा जब आबादी ही नहीं होगी?

और फिर फ़रमाया:-

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ (अल् इन्शक़ाक़ : 2)

जिस समय आसमान फट जाएगा।

इसी तरह फ़रमाया:-

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ (अल् इन्फ़तार : 2)

और इन्जील में भी इसी तरह मसीह मौऊद के आने की भविष्यवाणी है।

अत: इन आयतों से यह तात्पर्य नहीं है कि सचमुच उस समय आसमान फट जाएगा या उसकी शक्तियाँ समाप्त हो जाएँगी, बल्कि अभिप्राय यह है कि जैसे फटी हुई चीज़ बेकार हो जाती है उसी तरह आसमान भी बेकार सा हो जाएगा अर्थात् आसमान से भलाइयाँ नाज़िल नहीं होंगी और दुनिया अन्याय और अत्याचार से भर जाएगी अर्थात्

रूहानियत (आध्यात्मिकता) ख़त्म हो जाएगी, और इसको आज सब मानते हैं कि रूहानियत ख़त्म हो चुकी है।

और फिर एक जगह फ़रमाया:-

وَ اِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ (अल् मुरसलात् : 12)

जब रसूल निर्धारित समय पर लाए जाएँगे। यह संकेत वस्तुत: मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव की ओर है और इस बात का वर्णन करना उद्देश्य है कि वह ठीक समय पर आएगा।

(शहादतुल् क़ुर्आन, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-6 पृ. 317-319)

आजकल के उलमा मसीह मौऊद को न मानने के बहाने ढूँढ़ते हुए कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि क़यामत (महाप्रलय) के निकट का ज़माना होगा। अब कोई बताए कि जब धरती उथल-पुथल हो रही होगी तो रसूलों को जमा करके लाने का क्या मतलब है? असल बात यही है कि ख़ात्मुन्नबीयीन (समस्त अवतारों के गौरव हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने वालों में से एक रसूल (अवतार) आएगा जो तमाम् रसूलों के मानने वालों को इकट्ठा करेगा और ख़ात्मुन्नबीयीन (समस्त अवतारों के गौरव हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों और आदेशों के पालन की ओर लाएगा। काश पाखण्डी और रूढ़िवादी उलमा इस रहस्य को समझें। बहरहाल यह सारी क़ुर्आनी आयतें सिद्ध करती हैं कि यह ज़माना मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव का ज़माना है।

मसीह मौऊद के ज़माने के बारे में हदीसों में वर्णित पेशगोइयाँ

फिर आप ने मसीह मौऊद के ज़माने के बारे में हदीसों में वर्णित पेशगोइयाँ भी वर्णन कीं। उदाहरणत: मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के साथ नई सवारियों के आविष्कार की पेशगोई का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं:-

क़यामत के निकट होने और मसीह मौऊद के आने का वह ज़माना है कि जब ऊँटनियाँ बेकार हो जाएँगी यह आयत हदीस सहीह मुस्लिम की उस हदीस को सत्यापित करती है जहाँ लिखा है कि:-

وَ يُتْرَكَ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعَى عَلَيْهَا

अर्थात् मसीह मौऊद के ज़माना में ऊँटनियाँ बेकार छोड़ दी जाएँगी और उन पर कोई यात्रा न करेगा। यह रेलगाड़ी के आविष्कार की ओर संकेत है। क्योंकि जब कोई उच्चकोटि की सवारी मिलती है तब निम्नकोटि की सवारी को छोड़ते हैं। और दूसरी आयत मानो इसका परिणाम है और उसका तर्जुमा यह है कि उस ज़माने में दूर-दूर के लोग परस्पर मेल-मुलाक़ात करेंगे और लोगों की भौतिक दूरियाँ सिमट जाएँगी और हदीस सहीह मुस्लिम में खोलकर बयान कर दिया गया है कि ऊँटनियों के बेकार होने का ज़माना मसीह मौऊद का ज़माना है। इसलिए क़ुर्आन शरीफ़ की यह आयत :

وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (अल् तक़वीर : 5)

जो हदीस

يُتْرَكَ الْقِلَاصُ

के समानार्थक है, खोलकर बयान कर रही है कि रेल के आविष्कार की यह घटना मसीह मौऊद के ज़माने में होगी। और यह ज़माना

हमने देखा, मक्का और मदीना के बीच पहले अधिकतर सड़कमार्गों द्वारा यात्रा की जाती थी, पाँच-छः साल से अब तो वहाँ भी रेल की व्यवस्था हो गई है।

फ़रमाया:-

इसीलिए मैंने आयत اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ के यही अर्थ किए हैं कि वह ज़माना मसीह मौऊद का ज़माना है। क्योंकि हदीस ने इस आयत की व्याख्या कर दी है। चूँकि रेल के आविष्कार पर एक लम्बा ज़माना गुज़र चुका है जो मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव की एक निशानी है। इसलिए एक न्यायप्रिय को मानना पड़ता है कि मसीह मौऊद प्रकट हो चुका है।....सोचकर देखो कि जब मक्का और मदीना के बीच ऊँट को छोड़कर रेल की सवारी शुरू हो जाएगी तो क्या वह दिन इस आयत और इस हदीस को सत्यापित करने वाला न होगा? (और अब देखें कि इस ज़माने में वह शुरू भी हो चुकी है) अवश्य होगा और सारे उस दिन बोल उठेंगे कि आज वह पेशगोई मक्का और मदीना के बीच खुले-खुले तौर पर पूरी हो गई। हाय अफ़सोस इन नाम के मुसलमानो पर! जो (मुझसे ईर्ष्या-द्वेष के कारण) नहीं चाहते कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई पेशगोई पूरी हो।

(चश्मा-ए-मारिफ़त, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-23 पृ. 81-82 हाशिया)

क़ुर्आन और हदीस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत सी निशानियाँ और पेशगोइयाँ प्रस्तुत की हैं और साबित किया है कि यह ज़माना मसीह मौऊद के आने का ही ज़माना है।

इन सबको विस्तारपूर्वक बयान करना इस समय सम्भव नहीं। बहरहाल यह पेशगोई पेश करने के बाद आपने फ़रमाया:- कि वह आने वाला मसीह मौऊद मैं ही हूँ। अत: आप फ़रमाते हैं:-

''मैं घोषणापूर्वक कहता हूँ कि मेरा मसीह मौऊद होने का दावा इसी शान् का है कि हर एक पहलू से चमक रहा है। पहले इस पहलू को देखो कि मेरा दावा ख़ुदा की ओर से होने का और लगभग सत्ताईस वर्ष से ख़ुदा से इल्हाम और संवाद पाने का है। अर्थात् इस समय से भी बहुत पहले से है कि जब बराहीन अहमदिया अभी पूरी तरह संकलित नहीं हुई थी और फिर बराहीन अहमदिया के समय में वह दावा उसी किताब में लिखकर प्रकाशित किया गया जिसको लगभग चौबीस साल गुज़र गया है। अब बुद्धिमान व्यक्ति समझ सकता है कि झूठ का सिलसिला इतना लम्बा नहीं चल सकता और कोई व्यक्ति चाहे कितना ही झूठा हो वह इतने लम्बे समय तक जिसमें एक बच्चा भी पैदा होकर बाप बन सकता है स्वभावत: ऐसी दुष्टता नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त इस बात को कोई बुद्धिमान स्वीकार नहीं करेगा कि एक व्यक्ति लगभग सत्ताईस वर्ष से ख़ुदा तआला पर आरोप लगाता है और हर एक सुबह अपनी ओर से इल्हाम (ईशवाणी) बनाकर और पेशगोइयाँ रचकर ख़ुदा तआला की ओर मन्सूब करता है और हर एक दिन यह दावा करता है कि ख़ुदा तआला ने मुझे यह इल्हाम (ईशवाणी) किया है और ख़ुदा तआला का यह कलाम (वाणी) है जो मुझ पर उतरा है। जबकि ख़ुदा तआला जानता हो कि वह इस बात में झूठा है। न उसको कभी इल्हाम हुआ और न ख़ुदा तआला उससे हमकलाम हुआ। और ख़ुदा उसको एक लानती व्यक्ति समझता है मगर फिर भी उसकी सहायता करता है। यह सब कुछ होने के बावजूद झूठा है तब भी अल्लाह तआला उसकी सहायता करता है और उसकी जमाअत को तरक़्क़ी देता है। अजीब बात है। और उन तमाम् षडयन्त्रों और मुसीबतों से उसे बचाता है जो दुश्मन उसके लिए तय करते हैं। क्या यह अजीब बात नहीं?

फिर एक और दलील है जिससे मेरी सच्चाई चमकते हुए सूरज की तरह स्पष्ट हो जाती है और मैं ख़ुदा की ओर से हूँ इस बात का प्रमाण अपनी पराकाष्ठा को पहुँचता है और वह यह है कि उस ज़माने में जब मुझे कोई भी नहीं जानता था अर्थात् बराहीन अहमदिया के ज़माने में, जब मैं एक एकान्त में इस किताब को लिख रहा था और उस ख़ुदा के अतिरिक्त जो अन्तर्यामी है मेरी हालत से कोई परिचित न था तब उस ज़माने में ख़ुदा ने मुझे मुख़ातिब करके कुछ पेशगोइयाँ फ़रमायीं जो उसी एकान्तवास और ग़रीबी के ज़माना में बराहीन अहमदिया में छपकर सारे देश में प्रकाशित हो गईं।

(लैक्चर लाहौर, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-20 पृ. 188-189)

अल्लाह तआला के समर्थनों और सहायताओं का वर्णन

आज यहाँ दुनिया भर से आए हुए लोग जो क़ादियान में बैठे हुए हैं और पूरी दुनिया में जो अहमदी इस जलसा को देख रहे हैं और सुन रहे हैं क्या यह सब अल्लाह तआला के समर्थनों के प्रमाण नहीं? क्या झूठे दावे करने वाले को यह शोहरत मिलती है कि सारी दुनिया में उसके नाम का नारा लगाया जाता है और एक सौ तीस साल से अधिक समय से (बल्कि अब तो एक सौ चौंतीस साल हो गए हैं) चढ़ने वाला सूरज हर दिन जमाअत अहमदिया की तरक़्क़ी की ख़ुशख़बरी लेते हुए निकलता है। हे अहमदियत की मुख़ालिफ़त करने वालो! कुछ तो अक़्ल से काम लो।

अल्लाह तआला के समर्थनों का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

मुझ पर जो मेरी क़ौम तरह-तरह के आरोप लगाती है मुझे उनके आरोपों की कुछ भी परवाह नहीं, और घोर अन्याय होगा यदि मैं उनसे

डरकर सच्चाई की राह को छोड़ दूँ। और ख़ुद इनको सोचना चाहिए कि एक व्यक्ति को ख़ुदा अपनी ओर से दूरदर्शिता प्रदान की है और स्वयं उसको सन्मार्ग दिखला दिया है और उसको अपने वार्तालाप और सम्बोधन का सौभाग्य प्रदान किया और उसके सत्यापन के लिए हज़ारों निशान किए हैं, फिर किस तरह एक मुख़ालिफ़ की कल्पनाओं को कुछ चीज़ समझकर उस सत्यनिष्ठ से मुँह फेर सकता है (जिसे ख़ुद चुना है)। और मुझे इस बात की भी परवाह नहीं कि अन्दरूनी और बेरूनी (अर्थात् मुसलमान और अन्य) मुख़ालिफ़ मेरी नुक्ताचीनी में लगे हैं। क्योंकि इससे भी मेरी करामत ही साबित होती है। ....यदि हर प्रकार का दोष मेरे अन्दर है और उनके कथनानुसार मैं वचन तोड़ने वाला और झूठा और दज्जाल और मनगढ़त बातें बनाने वाला और बेईमान हूँ और हरामख़ोर हूँ और क़ौम में फ़ूट डालने वाला और फ़ित्ना फैलाने वाला हूँ और दुश्चरित्र और दुराचारी हूँ और ख़ुदा पर लगभग तीस साल से मनगढ़त बातें बनाने वाला हूँ और नेकों एवं सत्यनिष्ठों को गालियाँ देने वाला हूँ और मेरे अन्दर धृष्टता, बुराई, व्यभिचार और स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं, और केवल दुनिया के ठगने के लिए मैंने एक दूकान बनाई है, और नऊज़ुबिल्लाह (ख़ुदा की पनाह) उनके कथनानुसार मेरा ख़ुदा पर भी ईमान नहीं, और दुनिया का कोई दोष नहीं जो मुझमें नहीं, मगर इन बातों के बावजूद जो तमाम दुनिया के ऐब (दोष) मुझमें मौजूद हैं और हर एक प्रकार का अन्याय जो मेरे अन्दर भरा हुआ है और बहुतों के मैंने बेईमानी से धन हड़प लिए और बहुतों को मैंने (जो फ़रिश्तों की तरह निष्पाप थे) गालियाँ दी हैं। (वस्तुतः यह वे पाखण्ड़ी और दिखावटी लोग हैं जो अपने आप को नेक समझते हैं यह नहीं कि सचमुच निष्पाप थे बल्कि अपने आप को फ़रिश्तों की तरह निष्पाप समझते थे)। और

हर एक बदी और ठगबाज़ी में सबसे बढ़कर हिस्सा लिया। तो फिर इसमें क्या भेद है कि बद् और बदकार और बेईमान और झूठा तो मैं था, मगर मेरे मुक़ाबिल पर जब हर एक फ़रिश्ता जैसा आया तो वही मारा गया, जिसने मुबाहला (अभिशाप) किया वही तबाह हुआ, जिसने मुझ पर बद्दुआ की वह बद्दुआ उसी पर पड़ी। जिसने मुझ पर कोई मुकदमा न्यायालय में दायर किया उसी ने पराजय का मुँह देखा..... चाहिए तो यह था कि ऐसे मुक़ाबला के समय मैं ही तबाह होता, मेरे पर ही बिजली गिरती, बल्कि किसी को मुक़ाबले पर खड़े होने की भी आवश्यकता न थी, क्योंकि कि मुजरिम का स्वयं ख़ुदा दुश्मन है। इसलिए ख़ुदा के लिए सोचो कि यह उलटा असर क्यों ज़ाहिर हुआ, क्यों मेरे मुक़ाबले पर नेक मारे गए, और हर एक मुक़ाबले में ख़ुदा ने मुझे बचाया (अर्थात् नेक मारे गए से तात्पर्य वे केवल दिखावटी नेक हैं), क्या इससे मेरी करामत साबित नहीं होती? ''यह भी तो करामत साबित होती है। मैं इतना बुरा था इसके बावजूद अल्लाह तआला मेरी सहायता कर रहा है। इसलिए यह कृतज्ञता (एहसानमन्दी) का स्थान है कि जो दोष मुझ पर लगाए जाते हैं वे भी मेरी करामत ही साबित होती हैं।'' (हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-22 पृ. 2)

समर्थन में प्रकट होने वाले निशानों का वर्णन

फिर समर्थन में प्रकट होने वाले निशानों का वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं:-

''अब्दुलहक़ ग़ज़नवी सुम्मा अमृतसरी ने मुबाहला के बाद अपने सम्बन्ध में मुबाहला के असर के बारे में यह ऐलान किया था कि मेरा भाई मर गया है उसकी पत्नी से मैंने शादी की है और उसको गर्भ ठहर गया है और अब उसको लड़का पैदा होगा और

वह मुबाहला का असर समझा जाएगा। लेकिन उस गर्भ का परिणाम यह निकला कि कुछ भी पैदा न हुआ। उसने दावा किया था और मुबाहला का चैलेन्ज दिया था कि यह होगा, लेकिन कुछ भी पैदा न हुआ और अब तक चौदह साल गुज़र गए हैं, नामुरादी और ज़िल्लत की ज़िन्दगी भुगत रहा है। और इसके विपरीत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुबाहला के बाद मेरे घर में कई लड़के पैदा हुए और कई लाख इन्सान ने बैअत की और कई लाख रुपया आया और दुनिया के किनारों तक सम्मान के साथ मेरी प्रसिद्धि फैल गई और अधिकतर दुश्मन मुबाहला के बाद मर गए और हज़ारों आसमानी निशान मेरे हाथ पर ज़ाहिर हुए।''

(ततिम्मा हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-22 पृ. 444 हाशिया)

फिर इसी सन्दर्भ में आप अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं कि:-

''हर एक न्यायप्रिय व्यक्ति मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी की किताब को देखकर समझ सकता है कि किस तरह उसने अपने तौर पर मेरे साथ मुबाहला किया और अपनी किताब ''फ़ैज़-ए-रहमानी'' में उसको प्रकाशित कर दिया और फिर उस मुबाहला के केवल कुछ ही दिन बाद मर गया, और किस तरह चिराग़दीन जम्मू वाले ने अपने तौर से मुबाहला किया और लिखा कि हम दोनों में से झूठे को ख़ुदा तबाह करे और फिर इसके केवल कुछ ही दिन बाद ताऊन (प्लेग) से अपने दोनों बेटों सहित मर गया। ''

(हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-22 पृ.71 हाशिया)

जमाअती तरक़्क़ी की घटनाओं का प्रकटन

और फिर यह निशान आज भी प्रकट हो रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा कि हर दिन जमाअती तरक़्क़ी के नज़ारे हम देखते हैं। दूरदराज़

के इलाक़ों में बसने वाली विभिन्न क़ौमों के लोगों की अल्लाह तआला रहनुमाई फ़रमाता है। मुसलमान हों या ईसाई हों या नास्तिक हों, कई लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम की सच्ची शिक्षा का पता चला है तो वह जमाअत में शामिल होते हैं। किसी को अल्लाह तआला ख़्वाब के द्वारा या किसी विशेष निशान द्वारा इस ओर ध्यान आकर्षित करता है कि अहमदियत, सच्चाई और सच्चे इस्लाम की ओर ले जाने वाला एक रास्ता है। जहाँ अहमदियों को कई समर्थनपूर्ण निशान दिखाकर उनके ईमान को बढ़ाता है वहाँ दूसरों पर भी अहमदियत की सच्चाई प्रकट करता है।

आजकल ख़ुदा के समर्थनपूर्ण नित् नए निशान जो अल्लाह तआला ज़ाहिर कर रहा है कि किस तरह जमाअत अहमदिया फैल रही है उसके कुछ उदाहरण भी मैं प्रस्तुत कर देता हूँ:-

गिनीबसाओ (अफ्रीका महाद्वीप)

गिनीबसाओ एक देश है जहाँ आज इस समय जलसा भी हो रहा है, वहाँ जमाअत के एक सदस्य इब्राहीम साहिब हैं। एक दिन वह अपने मित्रों के साथ बैठे थे तभी पड़ोस के गाँव के एक इमाम साहिब वहाँ आए और जमाअत के ख़िलाफ़ बोलना शुरू कर दिया। इस पर इब्राहीम साहिब ने कहा कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सदस्य हूँ और जो कुछ आप कह रहे हैं वह पूर्णत: झूठ है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मानने वाली सच्ची जमाअत है और जिस इमाम महदी के आने की पेशगोई हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी उनको मानने वाली जमाअत है। आप एक इमाम होकर जमाअत के ख़िलाफ़ झूठ फैला रहे हैं, यह आपको शोभा नहीं देता। इस पर उस इमाम को बहुत ग़ुस्सा आया

और कहने लगा कि:-

अल्लाह तआला हमारे बीच फ़ैसला करेगा। यदि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो अल्लाह तआला मुझे सज़ा दे, और यदि तुम झूठ बोल रहे हो तो तुम्हें सज़ा मिले।

यह बात कहकर वह अपने गाँव की ओर चला गया। कुछ ही देर बाद सूचना मिली कि गाँव के बाहर एक एक्सीडेन्ट हुआ है जिसमें उसकी एक टाँग टूट गई है। जब यह सूचना गाँव पहुँची तो उनके मित्र जो बातचीत के समय वहाँ बैठे हुए थे बेझिझक कहने लगे कि नि:सन्देह अहमदियत सच्ची है, जिसका निशान अल्लाह तआला ने आज हमें दिखाया है। फिर उन्होंने अहमदियत क़ुबूल कर ली।

तन्ज़ानिया

तन्ज़ानिया के गीटा रीजन में न्यामूँगो एक गाँव है। तब्लीग़ के दौरान वहाँ एक ख़ानदान से हमारे प्रतिनिधि मंडल की मुलाक़ात हुई। जमाअत के बारे में उन्हें विस्तारपूर्वक बताया गया और जमाअत से छपने वाला अख़बार उन्हें पढ़ने के लिए दिया गया, जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फोटो भी थी। कुछ दिनों के बाद उन्होंने बताया कि:-

हमें तो ज़माने के इमाम की फोटो देखकर एक अजीब चैन सकून महसूस हो रहा है।

अत: उस ख़ानदान के सभी लोग बैअत करके जमाअत में दाख़िल हो गए। अब एक तरफ़ तो यह दुष्प्रकृति मौलवी-मुफ़्ती पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में भी हैं, कई ऐसे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फोटो को अपने पायदान में रखते हैं और पाँवों से मसलने की कोशिश करते हैं। लेकिन ख़ुदा ने ऐसे भी नेक फ़ितरत (सत्प्रकृति) लोग पैदा किए हैं जिनके लिए यह फोटो भी चैन

सकून का कारण बन रही है। हमारे मुख़ालफ़ीन (विरोधी) समझते हैं कि उनकी मुख़ालिफ़त अहमदियत की तरक़्क़ी की राह में रोक बन सकती है और यह दावा करते हैं कि हम अहमदियत को दुनिया से मिटा देंगे, (नऊज़ुबिल्लाह) और दुनिया के आख़िरी कोने तक इसका मुक़ाबला करेंगे। लेकिन अल्लाह तआला उनकी मुख़ालिफ़त में भी अहमदियत की सच्चाई के निशान दिखाता है।

अत: तन्ज़ानिया से एक नवअहमदी कहते हैं कि मेरा नाम अब्दुल्लाह है। अहमदी होने के बाद मैंने अपने लिए यह नाम पसन्द किया है। कहते हैं :

मेरे गाँव में कुछ समय पहले जमाअत अहमदिया के मुअल्लिम तब्लीग़ के उद्देश्य से आए तो कुछ लोगों ने उनकी बातें सुनकर अहमदियत क़बूल कर ली। मैंने उस समय बैअत नहीं की थी लेकिन अधिक जानकारी हासिल करने के लिए मुअल्लिम साहिब का टेलीफ़ोन नम्बर लिख लिया। जब मुअल्लिम साहिब वापस चले गए तो मैंने देखा कि कुछ दूसरे मुसलमान बड़ी-बड़ी गाड़ियों में आए हैं और उन्होंने नवअहमदियों को कहना शुरू किया कि अहमदी झूठे हैं, ये मुसलमान नहीं हैं इत्यादि-इत्यादि। यह देखकर मैंने अहमदिया जमाअत के मुअल्लिम साहिब को फ़ोन किया कि मैंने आपकी बातें सुनी हैं लेकिन अभी बैअत नहीं की। आपके जाने के बाद यहाँ मुसलमानों का एक गिरोह आया था जिसने षडयन्त्र रचा और हमें आपके ख़िलाफ़ भड़काने की कोशिश की है। यह मेरे लिए एक खुला-खुला निशान है कि आप सच पर हैं और मैं भी बैअत करके जमाअत अहमदिया में दाख़िल होना चाहता हूँ। सम्भवत: यदि यह मुख़ालिफ़त न होती तो वे कुछ समय और इन्तिज़ार करते और अधिक तहक़ीक़ करते, लेकिन उस मुख़ालिफ़त ने तुरन्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

की सच्चाई उन पर स्पष्ट कर दी और अल्लाह तआला ने क़बूलियत के लिए उनका दिल खोल दिया।

भारत

भारत से वहाँ के मुबल्लिग़ इन्चार्ज लिखते हैं कि तब्लीग़ के उद्देश्य से हम इम्फाल गए। वहाँ ताजिर साहिब नामक एक व्यक्ति से मुलाक़ात हुई। उन्होंने मिलकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की, कहने लगे कि मैं आप लोगों की बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहा था। उन्होंने बातचीत के दौरान अपने बैग से दो-तीन काग़ज निकाले जिन पर बैअत की शर्तें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में क़ुरआन और हदीस की पेशगोइयाँ लिखी हुई थीं। उन्होंने यह काग़ज ख़ुद तैयार करके अपने मित्रों में बांटने के लिए रखे हुए थे। कहने लगे कि:-

मुझे जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में पता चला तो मैंने सन् 2016 ई. में ही जमाअत अहमदिया में शामिल होने का ऐलान कर दिया था।

रेडियो से या किसी अन्य माध्यम से उन्हें यह सूचना मिली तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि मसीह मौऊद आ चुका है और मैं उनकी बैअत में दाख़िल होता हूँ। जिस पर लोगों ने मुख़ालिफ़त करना शुरू कर दिया, बल्कि कहते हैं कि एक दिन मुख़ालिफ़त करने वाले इकट्ठे होकर मुझे मारने और तौबा कराने के लिए निकले, लेकिन संयोग से ऐसा हुआ कि उस दिन भीषण भूकम्प (ज़लज़ला) आया और जो लोग मुझे मारने और तौबा कराने के लिए आने वाले थे उन लोगों का भीषण नुकसान हुआ। जिसके कारण वे मुझ तक पहुँच न सके। कहते हैं कि:-

मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि यह भूकम्प एक

निशान के रूप में आया जो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक निशान है।

तब से मैं आप लोगों की प्रतीक्षा में था। इसके बाद उन्होंने विधिवत् बैअत कर ली।

तन्ज़ानिया

इसी तरह तन्ज़ानिया की एक जगह है काबूगूज़ू। यहाँ भी एक इस्माईल साहिब नामक नए अहमदी हैं जो खेतीबाड़ी का काम करते हैं। वहाँ अफ्रीका में वर्षा के दिनों में कभी-कभी भीषण बिजली कड़कती है। उनके इलाक़े में जहाँ वह काम कर रहे थे पास में ही आसमानी बिजली गिरी। कहते हैं कि बिजली इतनी भयानक थी कि उसने मुझे उठाकर दूर फेंक दिया और मैं बेहोश हो गया। काफ़ी देर बाद होश आया, वर्षा तेज़ हो रही थी, वर्षा में भीगने के कारण मैं बहुत बीमार हो गया था, शारीरिक कमज़ोरी के कारण हिल भी नहीं सकता था और न ही आवाज़ देकर किसी को मदद के लिए बुला सकता था। जंगल के निकट खेत होने के कारण वहाँ लोगों का आना-जाना भी कम था।

मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि मुझे अहमदियत की सच्चाई का निशान दिखा।

अत: एक व्यक्ति मेरे निकट आया और मुझे कीचड़ में लतपथ देखकर समझा कि शायद मेरी मृत्यु हो चुकी है। मैंने कुछ हिम्मत करके अपना हाथ उठाकर हिलाया जिससे उसे अन्दाज़ा हुआ कि मैं अभी ज़िन्दा हूँ। उस व्यक्ति ने मुझे गाँव तक पहुँचाने में मदद की। इस तरह अहमदियत की बरकत से मुझे नई ज़िन्दगी मिली। बाद में पता चला कि गाँव में, हमारे खेत में बिजली गिरने और मेरी गुमशुदगी के कारण यह ऐलान कर दिया गया था कि मेरी मृत्यु हो

चुकी है। कहते हैं कि उस दिन मैंने जमाअत की सच्चाई का एक बड़ा निशान देखा, कहते हैं नि:सन्देह यह अल्लाह की जमाअत है और हम मरते दम तक इससे जुड़े रहेंगे, यह निशान मेरे लिए है। किस तरह अल्लाह तआला ईमानों को मज़बूत करता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई साबित करता है। जिसकी प्रकृति नेक हो वही इससे फ़ायदा उठा सकता है, गन्दी सोच के मौलवी-मुफ़्ती इससे फ़ायदा नहीं उठा सकते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादे के अनुसार अल्लाह तआला स्वयं किस तरह लोगों की रहनुमाई फ़रमाता है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी ज़िन्दगी में लोगों के अहमदियत क़ुबूल करने के बहुत से वाक़ियात (किस्से) बयान किए हैं। लेकिन यह सिलसिला बन्द नहीं हुआ बल्कि आज भी हम ऐसे बहुत से निशान देखते हैं। कुछ घटनाएँ प्रस्तुत कर देता हूँ:-

कतूनो शहर के निकट हुवैदोपसीजा नामक एक इलाक़ा है। वहाँ से एक ईसाई मित्र जिनका सम्बन्ध ईसाइयत के सलीसत (CELESTE) मत से है वह हमारी मस्जिद में आए और इस्लाम के बारे में कुछ प्रश्न किए। उन्हें इस्लामी शिक्षा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे के बारे में बताया गया। कहने लगे कि मैं जमाअत अहमदिया में दाख़िल होना चाहता हूँ, मुझे समझाओ नहीं। पूछने पर उन्होंने बताया कि वस्तुत: अल्लाह तआला ने स्वयं मेरी रहनुमाई की है। कहते हैं कि:-

कुछ दिन पहले मैंने ख़्वाब में दो बुज़ुर्गों (महापुरुषों) को देखा था। उनमें से एक ने मुझे संकेत करके कहा कि तुम जिस मज़हब पर क़ायम हो वह हिदायत का रास्ता नहीं, और दूसरे जो बुज़ुर्ग (महापुरुष) थे वह ख़्वाब में निरन्तर अल्लाहो अकबर, अल्लाहो

अकबर कह रहे थे।

इसलिए ख़्वाब के बाद मुझे यह संकेत मिल गया कि इस्लाम ही सच्चा मज़हब है। इसके बाद जब उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मेरी फोटो दिखाई गई तो आश्चर्यचकित होकर कहने लगे कि यही तो दोनों लोग थे जिन्होंने ख़्वाब में मेरी रहनुमाई की थी।

अत: वह भी अपने पूरे परिवार समेत ईसाई मज़हब छोड़कर अहमदियत अर्थात् हक़ीक़ी इस्लाम में दाख़िल हो गए और उनके घर के पास उनका जो चर्च था उसको उन्होंने मस्जिद बना लिया। इस तरह अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मदद के लिए लोग भेजता है।

अलबानिया

अलबानिया यूरोप का एक इलाक़ा है यहाँ जाफ़िर नामक एक नौजवान हैं। इकोनामिक्स में एम. ए. किया हुआ है। पहले तो उन्होंने जमाअत के बारे में इन्टरनेट से सुना था और जमाअत के ख़िलाफ़ झूठ और छल से भरी जो किताबें पाई जाती हैं उनको पढ़ा हुआ था। इसलिए जब मस्जिद आते तो कई प्रकार के सवाल लेकर आते, क्योंकि मुख़ालिफ़त में झूठ और छल से भरी हुई किताबें पढ़ी हुई थीं। वहाँ के नायब सदर बुयार रामाए साहिब ने उनसे विस्तारपूर्वक बातचीत की और तर्क एवं प्रमाणों के साथ उनके प्रश्नों के उत्तर दिए और उस नौजवान से कहा कि हज़रत अक़दस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। अत: उन्होंने पुस्तकों को पढ़ना शुरू कर दिया। सच्चे इस्लाम की वास्तविकता उन पर खुलने लगी। अहमदियत के बारे में और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के बारे में उनको पता लगा।

पहले बातों-बातों में वे ''मिर्ज़ा साहिब'' कहा करते थे। फिर इसके इसकी जगह उन्होंने The Messiah का शब्द बोलना शुरू कर दिया और अधिक अध्ययन एवं छानबीन करने लगे। अन्तत: जब उन्होंने इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी का अलबानियन अनुवाद पढ़ा तो यह उनको इतनी अच्छी लगी कि दो बार उन्होंने शुरू से अन्त तक उसको पढ़ा। उसी दौरान:-

उन्होंने ख़्वाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा, जिसमें हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन्हें ख़िलाफ़त से जुड़ने का आदेश दिया।

अत: इसके बाद वे बैअत करके जमाअत अहमदिया में दाख़िल हो गए, और अब यह नियमित रूप से जमाअत की वेबसाइट को पढ़ते हैं और जमाअत की ओर से की जाने वाली क़ुरआन मजीद की आयतों की तफ़्सीर की भी प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब वह आए और मैं पढ़ूँ, और बड़ी निष्ठा से जमाअत में शामिल हुए।

तन्ज़ानिया

तन्ज़ानिया की एक और जमाअत ''लुहूहा'' है। वहाँ की एक महिला ने आकर बताया कि रोज़ाना ख़्वाब में एक व्यक्ति आता है और कहता है कि इस्लाम क़ुबूल कर लो और अमन में आ जाओ। उनको हमारे मुअल्लिम साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर दिखाई तो उस महिला ने कहा कि यही वह व्यक्ति (महापुरुष) है जो मेरे ख़्वाब में आता है।

अत: उन्हें इस्लाम और अहमदियत के बारे में विस्तार से बताया गया, जिस पर उन्होंने बैअत कर ली।

क़िर्ग़िस्तान

क़िर्ग़िस्तान रूसी राज्यों में से एक राज्य है। यहाँ बिश्कीक से सरजानोवा साहिबा कहती हैं कि मैं क़िर्ग़िस्तान के पूर्व मुफ़्ती

चौबाक हाजी जलीलो को सुना करती थी और नमाज़ भी पढ़ती थी, मुसलमान थी, वहाँ बहुत सारे मुसलमान राज्य हैं। मैंने देखा कि मेरे भाई तौरारबेक ने भी नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया है और उसमें अच्छा बदलाव आ गया है। मुझे पता चला कि उसका एक दोस्त है जो अहमदी है और वही उसको मज़हब के बारे में बताता रहता है। फिर एक दिन मेरा भाई दज्जाल के बारे में एक वीडियो देख रहा था। पूछने पर उसने दज्जाल की हक़ीक़त के बारे में मुझे बताया। उस समय तो मैंने सोचा कि मेरा भाई ग़लत रास्ते पर है, लेकिन इसके बावजूद मुझे उसके उदाहरणों से दिलचस्पी पैदा हो गई। कुछ समय बाद मेरे भाई के अहमदी दोस्त ने मुझे भी मज़हब और अहमदियत के बारे में बताना शुरू किया। उसने क़ुरआन और हदीस से साबित किया कि अहमदियत ही सही रास्ता है। इसके बाद मुझे एहसास हुआ कि मज़हब कोई कहानी नहीं, बल्कि एक हक़ीक़त है। फिर कहती हैं मैंने ख़्वाब में देखा कि मेरे भाई का वही अहमदी दोस्त मुझे अहमदिया मुस्लिम जमाअत में लेकर जा रहा है। इस पर मैंने अहमदियत क़ुबूल कर ली और इस बात पर ईमान ले आई कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम ही मसीह मौऊद व महदी मअहूद हैं।

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशिया के एक नए अहमदी हैं, कहते हैं कि मुझे बताया गया था कि जमाअत अहमदिया गुमराही में पड़ी हुई है। मैं जमाअत अहमदिया में शामिल होने की बजाय एक ऐसी जमाअत में शामिल हो गया जो सरकार की मुख़ालिफ़त करने वाली जमाअत थी। 1992 ई. में उस जमाअत का अमीर पकड़ा गया तो मैंने उसके उत्तराधिकारी

के हाथ पर बैअत कर ली। उस समय मैंने इस्तिख़ार: किया (अर्थात् ख़ुदा से भलाई माँगी)।

ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग (महापुरुष) को देखा, उन्होंने कहा कि मैं ही इमाम महदी हूँ, मैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद हूँ। उस ख़्वाब के एक हफ़्ते बाद जब मैंने उस जमाअत को जो सरकार की विरोधी थी छोड़ना चाहा तो मुझे मजबूर किया गया कि तुम उसकी बैअत में रहो वर्ना क़त्ल कर दिये जाओगे। अतएव वह कहते हैं कि उसके एक साल के बाद एक अहमदी से मेरी मुलाक़ात हुई, उसने मुझे तब्लीग़ की। उस समय मैंने उसको कहा कि अगर तुम्हारा इमाम नबी है तो ज़रूर उसने कुछ दावे भी किए होंगे, किताबों में भी लिखे होंगे, वे मुझे दो। तो उन्होंने मुझे किताब दी। उसी रात एक बार फिर मैंने ख़्वाब में एक मस्जिद देखी। जिस पर ''अहमदिया'' लिखा हुआ था। वहाँ एक इण्डियन वेशभूषा पहने हुए आदमी खड़ा था, जो मुझे कहने लगा कि तुम इसमें दाख़िल हो जाओ। बहरहाल तीन दिन के बाद उसने मुझे किताब '' इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी'' भी दी।

जब मैंने किताब खोली तो शुरू में ही हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम की तस्वीर थी। उनका चेहरा देखकर याद आया कि यह तो बिल्कुल वही बुज़ुर्ग (महापुरुष) हैं जिन्हें पिछले साल मैंने ख़्वाब में देखा था। फिर मैंने उस किताब को शुरू से अन्त तक पढ़ा और बैअत कर ली।

इण्डोनेशिया से ही एक और घटना है। एक नौजवान को तब्लीग़ की गई उसने तुरन्त बैअत कर ली। वापस जाने से पहले कुछ किताबें दी गईं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर वाले BROCHURE (लीफलेट) भी दिए गए। जब नौजवान घर पहुँचा तो उसके पिता ने उससे पूछा यह क्या है, इसमें किसकी तस्वीर है।

जब उसने बताया कि यह (युगावतार) इमाम महदी की तस्वीर है और मैंने बैअत कर ली है तो उसने कहा कि अच्छा फिर मैं भी बैअत करता हूँ। अल्लाह तआला ने तुरन्त उसका हृदय परिवर्तन कर दिया।

माली

माली के सुकासू रीजन से आदम साहिब नामक एक व्यक्ति बैअत के लिए मिशन हाउस आए। जब उनसे बैअत का कारण पूछा गया तो उन्होंने बताया कि वह ''रेडियो अहमदिया'' बड़ी शौक़ से सुनते हैं। एक दिन रेडियो सुनते-सुनते उनकी आँख लग गई। उन्होंने ख़्वाब में देखा कि वह भागते-भागते एक अत्यन्त सुन्दर बाग़ में पहुँचे हैं जहाँ हर प्रकार के फूल और फल मौजूद हैं। उसी बाग़ में एक ओर उन्होंने देखा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने ख़ुल्फ़ा और सहाबा किराम के साथ बैठे हैं।

जब वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें एक व्यक्ति की ओर संकेत करके बताया कि वह इमाम महदी अलैहिस्सलाम हैं, जाकर उनकी बैअत करो।

आदम साहिब ने कहा कि इस ख़्वाब के बाद अगर अब भी बैअत न करूँ तो मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नाफ़रमानी करने वाला बनूँगा। इसलिए तुरन्त मेरी बैअत लें।

अत: क्या ये समर्थन और समर्थनपूर्ण निशान अल्लाह तआला की ओर से इस बात के मार्गदर्शन के प्रमाण नहीं हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ही वही मसीह मौऊद और महदी मअहूद हैं जिनके आने की ख़बर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दी थी। यदि दिल साफ़ हो, नीयत नेक हो तो इन दिखावटी और रूढ़िवादी मौलवी-मुफ़्तियों के पीछे चलने की

बजाय हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि अल्लाह तआला से दुआ करे और उससे रहनुमाई माँगे और मुख़ालिफ़त करने की बजाय जमाअत के बारे में सही निर्णय ले।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:-

''अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि वह इस सिलसिला को बढ़ाए। अत: कौन है जो इसे रोक ले? क्या तुम नहीं जानते कि बादशाह सब कुछ कर सकते हैं। फिर वह जो धरती-आसमान का बादशाह है कब थक सकता है? आज से पच्चीस वर्ष बल्कि इससे भी बहुत पहले ख़ुदा तआला ने ऐसे वक़्त में मुझे ख़बर दी कि एक आदमी भी मेरे साथ न था और कभी साल भर में भी कोई ख़त न आता था। उस गुमनामी की हालत में मैंने जो दावे किए वे बराहीन अहमदिया में छपे हुए मौजूद हैं और यह किताब अपनों और परायों के पास मौजूद है बल्कि हिन्दुओं, ईसाइयों तक के पास भी है, मक्का, मदीना और क़ुस्तुनतुनिया तक भी पहुँची है। इसे खोलकर देखो कि उस समय ख़ुदा तआला ने फ़रमाया:-

يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ وَ يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ۔

अर्थात् तेरे पास दूर-दूर से लोग आएँगे और जिन रास्तों से आएँगे उन रास्तों में गड्ढे पड़ जाएँगे। फिर फ़रमाया:- कि लोग बड़ी अधिकता से आएँगे तू उनसे थकना नहीं और उनसे किसी प्रकार का क्रोध और दुर्व्यवहार न करना। यह स्वाभाविक बात है कि जब लोगों की अधिकता होती है तो इन्सान उनकी मुलाक़ात से घबरा जाता है और कभी मुँह फेर लेता है, जो एक प्रकार का दुर्व्यवहार है। अत: उसे इस बात से मना किया और कहा कि उनसे थकना नहीं और मेहमान नवाज़ी के कर्तव्य पूरे करना। यह ख़बर ऐसे हालात में दी

गई थी कि जब कोई भी न आता था और अब तुम सब देख लो कि कितनी संख्या में मौजूद हो। यह कितना बड़ा निशान है? इससे अल्लाह तआला का अन्तर्यामी होना साबित होता है। ऐसी ख़बर अन्तर्यामी ख़ुदा के बिना कौन दे सकता है, न कोई ज्योतिषी और न कोई हाथ की रेखाएँ देखने वाला कह सकता है। इन हालात पर जब एक स्वच्छ प्रकृति मोमिन ग़ौर करता है तो उसे आनन्द आता है। वह विश्वास करता है कि एक ख़ुदा है जो चमत्कारी भविष्यवाणियाँ बताता है। अत: इस भविष्यवाणी में उसने बड़ी अधिकता से मेहमानों के आने-जाने की सूचना दी। फिर चूँकि उनके खाने-पीने के लिए काफ़ी सामान चाहिए था और उनके ठहरने के लिए मकानों का प्रतिबन्ध होना चाहिए था तो इसके लिए साथ ही शुभसूचना दी कि:-

يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

(यातीक मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अमीक़)

आज अब क़ादियान को देखें, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बहुत से गेस्ट हाऊस बन चुके हैं और इमारतें बन चुकी हैं। अब ग़ौर करो कि जिस काम को अल्लाह तआला ने ख़ुद करने का वादा और इरादा किया है, कौन है जो उसकी राह में रोक हो। वह ख़ुद सारी ज़रूरतों को पूरा करता है। यह बात इन्सान की ताक़त से बाहर है कि इतने साल पहले एक घटना की शुभसूचना दे कि उतने वर्षों में एक बच्चा भी पैदा होकर बाप बन सकता है। यह ख़ुदा तआला का एक बहुत बड़ा निशान है। यही कारण है कि ख़ुदा तआला की किताबों में लिखा है कि सत्यनिष्ठ की निशानी पेशगोई है और यह बहुत बड़ा निशान है जिस पर ग़ौर करना चाहिए। क़ुरआन करीम से ज्ञात होता है कि ईमान गहन चिन्तन-मनन करने से बढ़ता है। जो लोग अल्लाह तआला के निशानों पर ग़ौर नहीं करते उनका क़दम डगमगाने वाली

जगह पर होता है। यह बिल्कुल सच्ची बात है कि इन्सान अपने ईमान में उस समय तक तरक़्क़ी नहीं कर सकता जब तक ख़ुदा तआला के कथनों-कार्यों और शक्तियों पर गहराई से चिन्तन-मनन न करे। अत: यह सिलसिला इसी उद्देश्य के लिए क़ायम हुआ है ताकि अल्लाह तआला पर विश्वास बढ़े.....किसी दूसरे मज़हब वाले को यह सामर्थ्य और साहस कहाँ कि वह ऐसे नवीनतम निशान प्रस्तुत करे। जमाअत के लोग ख़ूब समझ सकते हैं कि कितने निशान ज़ाहिर होते रहते हैं। यह केवल ख़ुदा तआला का काम है किसी और को इसमें दख़ल नहीं।''

(मलफ़ूज़ात जिल्द-8 पृ. 369-371 संस्करण 1984)

आज आप लोग जो क़ादियान में जलसा में शामिल हैं और वे सब लोग जो अपने देशों में जलसा में शामिल हैं इस बात को सत्यापित कर रहे हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम नि:सन्देह वही (युगावतार) मसीह मौऊद व महदी मअहूद हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेशगोइयों के अनुसार अवतरित हुए और जिनके साथ अल्लाह तआला का समर्थन हमेशा रहा है और रहेगा। इन्शाअल्लाह।

हर अहमदी को भी यह प्रण करना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमने अनवरत प्रयास करना है। अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक हालतों का जायज़ा लेते रहें। उनको बेहतर करने की कोशिश करते रहें।

दुआओं का आह्वान

अब इसके बाद हम दुआ भी करेंगे, दुआ में अपने फ़िलिस्तीनी भाई-बहनों और बच्चों को याद रखें कि अल्लाह तआला जल्द उन्हें ज़ुल्म की चक्की से निकाले।

उन मुसलमानों के लिए भी दुआ करें जिनकी अपनी सरकारों ने अपने स्वार्थों के लिए उन्हें ज़ुल्म का निशाना बनाया हुआ है। पाकिस्तानी अहमदियों के लिए भी दुआ करें, असीराने राह-ए-मौला के लिए भी दुआ करें।

इन्शाअल्लाह कल से नया साल शुरू हो रहा है। आज रात तहज्जुद में नए साल के शुभ होने और दुनिया से अन्याय एवं अत्याचार के अन्त होने के लिए भी दुआ करें। लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव के उद्देश्य को समझने के लिए भी दुआ करें और उन्हें स्वीकार करने के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला सब को अपनी सुरक्षा में रखे।

क़ादियान में इस समय जलसे की हाज़िरी 14,930 है, जो लगभग पन्द्रह हज़ार के निकट है, जिसमें 42 देशों के सदस्य शामिल हैं। दुआ करें कि अल्लाह तआला यह जलसा हर लिहाज़ से बाबरकत करे और विशेष रूप से नव वर्ष के हर तरह से बाबरकत होने के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम पर भी रहम करे और आने वाले वर्षों में जमाअत अहमदिया को पहले से बढ़कर उन्नति प्रदान करे। आओ सब मिलकर दुआ कर लें, (दुआ)।

जो देश इस समय (M.T.A. के माध्यम से) सीधे तौर पर शामिल हैं उनमें सैनीगाल, टोगो, गिनी कनाकरी और गिनीबसाओ हैं। अल्लाह तआला इन सब के जलसे भी कामियाब करे और उनके ईमान और यक़ीन को भी बढ़ाए। अस्सलामो अलैकुम।

(अल-फ़ज़्ल इन्टरनेशनल 20 जुलाई सन् 2024 ई. पृ. 1-7)

☆ ☆ ☆